# अपभ्रंश-साहित्य

देवेन्द्रकुमार जैन

यद्यपि महाकवि कालिदासके "विक्रमोर्वशीय" नाटक(ई० लगभग प्रथम शताब्दी)के चतुर्थ अंकमें, कवि शूद्रक विरचित "मुद्राराक्षस" नाटकके (लगभग दूसरी शताब्दी) दूसरे अंकमें और शैवागम तथा चर्यापदोंमें अपभ्रंशकी बिखरी हुई सामग्री मिलती है, जिससे यह पता चलता है कि भाषाके रूपमें यह ई० पू० प्रथम शताब्दीसे ही प्रचलित रही होगी परन्तु साहित्यके पद पर लगभग पांचवी शताब्दीमें प्रतिष्ठित हुई होगी। क्योंकि छठी शताब्दीके भामह संस्कृत और प्राकृतकी भांति अपभ्रंश काव्यका भी उल्लेख करते हुए तीन प्रकारकी भाषाओंमें काव्य लिखे जानेका अभिधान करते हैं[1]। यही नहीं, अपभ्रंशमें उस युगमें मुख्य रूपसे कथाएं लिखी जाती थीं[2] जो स्वाभाविक भी है। देशी भाषा और साहित्यके प्रतिष्ठित होनेमें दो-चार युगोंका नहीं, शताब्दियोंका समय लगा होगा। आठवीं शताब्दीमें अपभ्रंशमें इतने सुन्दर और कलासम्पन्न महाकाव्य लिखे जाने लगे थे कि उनको देख कर सहजमें ही दो सौ वर्ष पूर्वकी स्थितिका अनुमान हो जाता है जब लोककवियोंने अपभ्रंशके प्रबन्ध काव्योंकी रचना प्रारम्भ कर दी थी। महाकवि स्वयम्भू (नवम शताब्दीका प्रारम्भ) ने "स्वयम्भूछन्द" तथा "रिट्ठणेमिचरिउ"में गोविन्द, चतुर्मुख, महट्ट, सिद्धप्रभ आदि कई अपभ्रंश कवियोंका उल्लेख किया है जिससे प्रबन्धकाव्योंकी परम्पराकी प्राचीनता तथा अपभ्रंश काव्य एवं कवियोंका पता चलता है। चतुर्मुखके द्वारा लिखित पउमचरिउ, रिट्ठणेमी-चरिउ और पंचमीकहाका उल्लेख मिलता है पर रचनाएं अभी तक उपलब्ध नहीं हो सकीं[3]। इन उल्लेखोंसे यह निश्चय हो जाता है कि लगभग छठी शताब्दीसे अपभ्रंश प्रबन्धकाव्योंकी रचना होने लगी थी।

---

१ शब्दार्थौ सहितौ काव्यं गद्यं पद्यञ्च तद्द्विधा।
संस्कृतं प्राकृतं चान्यदपभ्रंश इति त्रिधा ॥ काव्यालंकार, १,१६

२ न वक्त्रापरवक्त्राभ्यां युक्ता नोच्छ्वासवत्यपि।
संस्कृतं संस्कृता चेष्टा कथापभ्रंशभाकथा ॥ वही, १,२८

३ जैन ग्रंथ प्रशस्ति संग्रह, पृ० ३६।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लगभग एक सहस्र वर्षोंके दीर्घ काल-परिमाणमें अपभ्रंश साहित्यकी रचना होती रही है। उपलब्ध साहित्य नौवीं शताब्दीसे अठारहवीं शताब्दी तकका है। अधिकांश साहित्य पद्यबद्ध है। स्वतन्त्र रूपसे कोई गद्य-रचना नहीं मिलती। यहां तक कि श्रुतकीर्ति विरचित "योगशास्त्र" और वैद्यक ग्रन्थ "जगत्सुन्दरी प्रयोगमाला" पद्यबद्ध ही हैं। मुख्य रूपसे उद्योतनसूरिकृत "कुवलयमाला-कथा" (वि० सं० ८३५) और दामोदर रचित "उक्तिव्यक्तिप्रकरण"(११-१२वीं शताब्दी)में अपभ्रंश गद्यके नमूने मिलते हैं। साधु सुन्दरगणिकृत "उक्तिरत्नाकर"में भी देशी शब्द तथा भाषाके उदाहरण मिलते हैं। तन्त्रसारमें अपभ्रंशके केवल कुछ पद्य ही प्राप्त होते हैं[1]। इस प्रकार फुटकर तथा मुक्तक रूपमें मध्ययुगीन अन्य भारतीय भाषाओंमें लिखित साहित्यमें भी अपभ्रं भाषाके नाम-रूपोंकी छाप देखी जा सकती है।

उपलब्ध अपभ्रंश-साहित्यकी तालिका[2] इस प्रकार है—

| | |
|---|---|
| **अम्बदेव सूरि** | समरारास (रचना सं० १३७१)-प्रकाशित |
| **अब्दुल रहमान** | सन्देशरासक (१२ वीं शताब्दी ?), |
| **अभयगणि** | सुभद्राचरित (रचना सं० ११६१) |
| **अभयदेवसूरि** | जयतिहुअणस्तोत्र (रचना सं० १११९)-प्रकाशित |
| **अमरकीर्तिगणि** | णेमिणाथचरिउ (र० सं० १२४४), छक्कम्मोवएस-(र० सं० १२४७), पुरंदरविहाणकहा (र० स० १२७५), महावीरचरिउ, जसहरचरिउ, झाणपईव (अनुपलब्ध)। |
| **अमरमुनि** | छन्दोरत्नावली |
| **असवाल** | पासणाहचरिउ (र० सं० १४७९) |
| **आसिग** | जीवदयारास (वि० सं० १२५७) |
| **ईश्वरगणि** | शीलसन्धि |
| **ऋषभदास** | रत्नत्रयपूजा |
| **कनककीर्ति** | नन्दीश्वर जयमाला |
| **कनकामर** | करकण्डचरिउ (११ वीं शताब्दी)-प्रकाशित |
| **गुणभद्र भट्टारक** | अणंतवयकहा, सवणवारसिविहाणकहा, पक्खवइकहा, णहपंचमी, चंदायण, चंदणछट्ठी, णरयउतारी दुद्धारस, णिद्दुहसत्तमी, मउडसत्तमी, पुप्फंजलिवय, रोहिणीविहाण, रयणत्तयविहाण, दहलक्खणवय, लद्धविहाण, सोलहकारणवयविहि, सुयंधदहमीकहा। |
| **जयदेव** | भावनासंधि (र० सं० १६०६) |
| **जयमित्रहल** | श्रीपालचरित्र, वर्द्धमानकथा, मल्लिनाथकाव्य। |
| **जल्हिग** | अनुप्रेक्षारास |

१ जह जह जस्सु जहिं, चिव पफुरइ अज्जवसाउ।
तह तह तस्सु तहिं, चिव तारिसु होइ पहाउ ॥ तंत्रसार (अभिनवगुप्त), ४,१

२ यह तालिका अधिकतर उपलब्ध ग्रन्थोंके आधार पर प्रामाणिक रूपसे तैयार की गई है। यद्यपि 'जिनरत्नकोश'-(खण्ड १)में इस सूचीमें अनुल्लिखित ग्रन्थोंका अपभ्रंश-ग्रन्थोंके नामसे उल्लेख मिलता है, किन्तु वे अप्राप्य होनेसे या प्राकृत भाषामें लिखित होनेसे इस तालिकामें सम्मिलित नहीं किये गये हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

| | |
|---|---|
| जिनदत्तसूरि | उपदेशरसायनरास (सं० ११३२–१२१०), चर्चरी रास। |
| जिनपद्मसूरि | स्थूलभद्रफाग (सं० १३९० के लगभग) |
| जिनप्रभसूरि | अनाथसन्धि, अन्तरंगरास, अन्तरंगविवाह। |
| जिनप्रभसूरि | आत्मसम्बोध कुलक, मोहराजविजय, सावयविहि, जिनजन्ममह, नेमिनाथरास। |
| जिनप्रभसूरि | वज्रस्वामिचरिउ (सं० १३१६) |
| जिनभद्र | सुभाषितकुलक |
| जिनवरदेव | बुद्धिरसायण |
| छत्रसेन | रुक्मिणीविधान |
| कवि ठकुरसी | मेघमालाकथा (र० सं० १५८०) |
| कवि ठाकुर | सांतिणाहचरिउ (र० सं० १६५२), महापुराण कलिका (र० सं० १६५०) |
| तेजपाल | संभवणाहचरिउ (प्रतिलिपि सं० १५८३), वरांगचरिउ–(र० सं० १५०७), पारसणाहपुराणु (१६ वीं शताब्दी)। |
| पं० दर्शन विजय | विजयतिलकसूरिरास (सं० १६७९)–प्रकाशित |
| दामोदर | णेमिणाहचरिउ (र० सं० १२८७) |
| दामोदर (जिनदेव के पुत्र) | सिरिपालचरिउ, णेमिणाहचरिउ, चंदप्पहचरिउ। |
| देवचन्द | पासणाहचरिउ (लिपि सं० १४९४) |
| देवदत्त | वरांगचरित, शान्तिनाथपुराण, अंबादेवीरास–(अनुपलब्ध) |
| देवसेन | सावयधम्मदोहा–प्रकाशित। |
| कवि देवदत्त | पासणाहचरिउ (र० सं० १२७५) |
| देवनन्दी | रोहणीवयकहा |
| देवसूरि | उपदेशकुलक |
| देवसेनगणि | सुलोयणाचरिउ |
| देल्हण | गयसुकुमालरास (वि० सं० १३०० के लगभग) |
| धनपाल | भविसयत्तकहा (र० सं० १३९३) |
| धनपाल | बाहुबलिचरिउ (र० सं० १४५४) |
| धर्मसूरि | जम्बूसामिरास (र० सं० १२६६) |
| धवल कवि | हरिवंसपुराण (१२ वीं शताब्दी के लगभग) |
| धाहिल | पउमसिरिचरिउ (१० वीं शताब्दी के लगभग)–प्रकाशित |
| नयनन्दी | सुदंसणचरिउ, सयलविहिविहाणकव्व (र० सं० ११०० के लगभग) |
| नरसेन | सिद्धचक्ककहा, जिणरत्तिविहाणकहा (१४ वीं शताब्दी के लगभग) |
| नेमचन्द | रविवउकहा, अणंतवयकहा |
| पद्मकीर्ति | पासणाहचरिउ (वि० सं० ९९९) |
| पुष्पदन्त | महापुराण (वि० सं० १०१६–१०२२), नागकुमारचरित, यशोधरचरित–प्रकाशित। |
| पूर्णभद्रमुनि | सुकुमालचरिउ |
| प्रज्ञातिलक | कछूलिरास (वि० सं० १३६३) |

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

| | |
|---|---|
| बालचन्द्रमुनि | निरयदुहसत्तमीकहा, रविवउकहा, णरयउतारी, दुद्धारसकहा। |
| बूचिराज (वल्ह) | मयणजुज्झ (वि० सं० १५८९) |
| ब्र० उंदू | चैतिरासा |
| ब्रह्म साधारण | कोकिलापंचमीकहा, मुकुटसप्तमीकथा, दुधारसीकथा, आदित्यवार, तीनचउबीसी, पुष्पांजलि, निर्दुःखसप्तमी, निर्झरपंचमीकथा। |
| भगवतीदास | मिगांकलेहाचरिउ (वि० सं० १७००), मउडसत्तमीकहा, सुयंधदहमी-कहा। |
| महणसिंह | त्रिंशत्जिनचउबीसी |
| महीचन्द | शान्तिनाथपुराण (र० सं० १५८७) |
| महीराज | नलदवदंतीरास (सं० १५३९) |
| महेश्वरसूरि | संजममंजरी तथा आ० हेमचन्द्रसूरिकृत "संजममंजरी" की स्वोपज्ञ विवृति एवं टीका[1] |
| माणिक्कचंद | सत्तवसणकहा (र० सं० १६३४) |
| माणिक्कराज कवि | अमरसेनचरिउ (वि० सं० १५७७), णायकुमारचरिउ (सं० १५७६) |
| मुनि कुमुदचंद | नेमिनाथरास |
| मुनि चारित्रसेन | समाधिरास |
| मुनि यशःकीर्ति | जगसुन्दरीप्रयोगमाला (आयुर्वेद) |
| यशःकीर्ति | चंदप्पहचरिउ (१२–१३ वीं शताब्दी के लगभग) |
| यशःकीर्ति | पाण्डवपुराण (र० स० १४९७), हरिवंसपुराण (र० सं० १५००) जिनरत्तिविहाणकहा, रविवउकहा। |
| योगीन्द्रदेव | परमप्पयासु, जोयसार। |
| पं० रइधू | पउमचरिउ, हरिवंसपुराण, आदिपुराण (अनुपलब्ध), पासपुराण, सम्मत्तगुणनिधान, मेहेसरचरिउ, जीवंधरचरिउ, जसहरचरिउ, पुण्णासव-कहाकोस, धनकुमारचरिउ, सुकोसलचरिउ, सम्महजिनचरिउ, सिद्ध-चक्कवयविहि, वृत्तसार, सिद्धान्तार्थसार, आत्मसम्बोहकव्व, अणथमीकहा, सम्मत्तकउमुदी, करकण्डु-सुदंसणचरिउ (अनुपलब्ध), दशलक्षणजयमाला, षोडशकारणजयमाला, सम्यक्त्वभावना सोहंथुदि (अनेकान्त में प्रकाशित)। |
| रल्ह कवि | जिनदत्तचउपई (र० सं० १३५३) |
| रल्हण | प्रद्युम्नकथा |
| राजशेखरसूरि | नेमिनाथफाग (सं० १४०५ के लगभग) |
| रामसिंह मुनि | पाहुडदोहा (विक्रम की दसवीं शताब्दी के लगभग) |
| रत्नप्रभसूरि | अंतरंगसंधि (वि० सं० १३६२) |

१ अन्य टीका-ग्रन्थोंके रूपमें अपभ्रंश भाषामें लिखित देवेन्द्रसूरिकृत "उत्तराध्ययनसूत्र वृत्ति", रत्नप्रभसूरिकृत "उपदेशमाग दोधरी वृत्ति", मूलशुद्धप्रकरण वृत्ति, आख्यातमणिकोष वृत्ति तथा भवभावनाप्रकरण वृत्ति उल्लेखनीय हैं। 'संजममंजरी'की टीका बृहत् है। पुस्तकाकार लगभग तीनसौ पृष्ठोंकी है, जो अभीतक अप्रकाशित है। लेखक इस ग्रन्थका संस्करण तैयार कर है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

| | |
|---|---|
| ललितकीर्ति भट्टारक | जिनरात्रिकथा, ज्येष्ठजिनवरकथा, दशलक्षणीकथा, घनकलशकथा, कंजिकाव्रतकथा, कर्मनिर्जराचर्तुदशी कथा। |
| लाखू (लक्ष्मण) | जिणदत्तकहा (र० सं० १२७५), अणुव्रयरयणपईव (वि० सं० १३१३), चंदणछट्ठीकहा। |
| लक्ष्मण | णेमिणाहचरिउ (१४ वीं शताब्दी के लगभग) |
| लखमीचंद | दोहाणुप्रेक्षारास |
| वज्रसेनसूरि | भरतेश्वर-बाहुबलिघोररास |
| वरदत्त | वज्रस्वामीचरित्र |
| वर्द्धमानसूरि | वीरजिनपारणक |
| विजयसिंह | अजितनाथपुराण (वि० सं० १५०५) |
| विजयसेनसूरि | रेवंतगिरिरास (वि० सं० १२८७),–प्रकाशित |
| विद्यापति | कीर्तिलता (१५ वीं शताब्दी)–प्रकाशित |
| विनयचंद | चूनडीरास, निज्झरपंचमीविहाणकहा, कल्याणकरास, दुद्धारस कहा। |
| विनयचन्द्रसूरि | नेमिनाथ चउपई (वि० सं० १२५७) |
| विनयप्रभ | गौतमस्वामीरास (वि० सं० १४१२) |
| विमलकीर्ति | सोखवइविहाणकहा, सुयंवंदसमीकहा, चंदायणवउकहा। |
| वीर कवि | जम्बूसामिचरिउ (र० सं० १०७६) |
| वीर कवि | णाणसार की पाथडी |
| विबुध श्रीधर | पासपुराण (र० सं० ११८९), वड्ढमाणचरिउ (र० सं० ११९०), चंदप्पहचरिउ (अनुपलब्ध) |
| शालिभद्रसूरि | पंचपण्डवचरितरास (वि० सं० १४१०) |
| शालिभद्रसूरि | भरतेश्वरबाहुबलिरास (वि० सं० १२४१), बुद्धिरास,–प्रकाशित |
| शुभकीर्ति | सांतिणाहचरिउ |
| श्रीचंद | कहाकोसु, रयणकरण्डसावयायार (र० सं० ११२०) |
| श्रीचंद | चंदप्पहचरिउ (वि० सं० १७९३) |
| श्रीधर | सुकुमालचरिउ (र० स० १२०८) |
| श्रीधर | भविसयत्तकहा (र० सं० १२३०) |
| श्रीभूषण | वसुधीरचरिय (?) |
| श्रुतकीर्ति | हरिवंसपुराण (वि० सं० १५५२), परमेष्ठीप्रकाशसार, धर्मपरीक्षा, योगसार (१६ वीं शताब्दी)। |
| सहणपाल | सम्यक्त्वकौमुदी |
| कवि सारमूर्ति | जिनपद्मसूरि पट्टाभिषेकरास (१७ वी शताब्दी के लगभग)। |
| सागरदत्तसूरि | जम्बूसामिचरिउ (वि० स० १०६०) |
| साधारण सिद्धसेन | विलासवईकहा (र० सं० ११२३) |
| सिद्ध–सिंह कवि | पज्जुण्णचरिउ (१२ वीं शताब्दी के लगभग) |
| सुप्रभाचार्य | सुप्पयदोहा (वैराग्यसार) |
| सुमतिगणि | नेमिनाथरास (लगभग १३ वीं शताब्दी) |
| सोमप्रभसूरि | कुमारपाल प्रतिबोध (वि० सं० १२४१)–प्रकाशित |

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

| | |
|---|---|
| **स्वयंभू, त्रिभुवन स्वयंभू** | पउमचरिउ, हरिवंसपुराण, स्वयम्भूछन्द, पंचमीकहा, स्वयम्भू व्याकरण (अनुपलब्ध)। |
| **हरिचंद** | अणत्थमीकहा, दशलक्षणकथा, नारिकेरकथा। |
| **हरिदेव** | मयणपराजयचरिउ (१५ वीं शताब्दी के लगभग) |
| **हरिभद्रसूरि** | सनत्कुमारचरित (वि० सं० १२१६) प्रकाशित-रिट्ठणेमिचरिउ |
| **हरिभद्र** | णेमिकुमारचरिउ–प्रकाशित |
| **हरिषेण** | धम्मपरिक्खा (वि० सं० १०४४) |
| **हरिसिंह साधु** | सम्यक्त्वकौमुदी (प्रकाशित, अनेकान्त, ११, २) |
| **हेमचन्द्रसूरि** | सिद्धहेमशब्दानुशासन, देशीनाममाला (१३ वीं शताब्दी)–प्रकाशित |
| **हेमचन्द्र ब्रह्म** | श्रुतस्कन्ध |

इनके अतिरिक्त पाटनके भण्डारमें जिनप्रभसूरिके नामसे मृगापुत्र कुलक, सुभाषित कुलक, विवेक कुलक, धर्माधर्म विचार कुलक, मल्लिनाथचरित्र, भव्यचरित्र, भव्यकुटुम्बचरित्र, महावीरचरित्र, जिनजन्म-मह, श्रावकविधि, अन्तरंगविवाह, चैत्यपरिपाटी, साधार्मिक वात्सल्य कुलक, वज्रस्वामीचरित्र (वि० सं० १३१६), मोहराजविजय, नर्मदासुन्दरीसन्धि (वि० सं० १३२८), अंतरंगसंधि, अनाथसंधि, मदनरेखासंधि, जीवानुशास्तिसंधि, ऋषभचरितस्तवन, नेमिरास (वि० सं० १२९७), गौतमचरित्र कुलक, जिनागमवचनस्तवन, भावना कुलक, भावनासार, युगादिजिनचरित्र कुलक, मुनिसुव्रतस्वामीस्तोत्र, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ–मुनिसुव्रत–जिनजन्माभिषेक तथा जिनजन्मोत्सवस्तवन आदि अनेक रचनाएं मिलती हैं। इसी प्रकार आ० जिनदत्तसूरि विरचित उपदेशरसायनरस, कालस्वरूप कुलक, अवस्था कुलक, चर्चरी, आ० जिनवल्लभसूरिकी स्तुति, स्तवन आदि कई रचनाओंका उल्लेख मिलता है। अपभ्रंशमें ऐसी अनेक छोटी-बडी रचनाएं रास, सन्धि, कुलक, चर्चरी आदि रूपमें उपलब्ध होती हैं जिनके लेखकोंके संबंधमें कुछ भी ठीक रूपसे ज्ञात नहीं हो सका है। ऐसी रचनाओंमें कुछ निम्न-लिखित हैं—

बाहुबलपाथड़ी, वसन्तविलास फाग (सं० १४००–१४२५), जिनचंदसूरि फाग (सं० १३४१के लगभग), आबूरास (१३वीं शताब्दी), चर्चरिका, शालिभद्रमातृका, संवेगमातृका, जम्बूचरित्र, मदनरेखा-चरित्र, मृगपुत्र महर्षिचरित्र, चतुरंगसन्धि, चतुर्विंशतिजिनकल्याणक, कथाएं, स्तुतिस्तवन आदि।

इस प्रकार अपभ्रंश-साहित्य कई रूपोंमें तथा विधाओंमें विकसित मिलता हैं। यद्यपि अभी तक इसका सम्पूर्ण साहित्य उपलब्ध नहीं हो सका है परन्तु जो प्रबन्ध रचनाएं मिलती हैं वे कई बातोंमें मध्ययुगीन भारतीय साहित्यमें अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। और उन्हींकी परम्परा तथा शैली पर परवर्ती हिन्दी साहित्य तथा अन्य भारतीय आर्य भाषाओंका साहित्य लिखा गया। भाषा और साहित्य दोनों ही रूपोंमें नव्य भारतीय आर्यभाषाओंका वाङ्मय अपभ्रंशसे पुरस्कृत हुआ है। और इसीलिए परिणामकी दृष्टिसे नहीं, मूल्यांकनकी दृष्टिसे यह साहित्य प्राचीन भारतीय आर्य साहित्य और आधुनिक भारतीय साहित्यकी मध्यवर्ती कड़ी है जो जन-जनकी चेतनाको आज भी अपनी सहज वाणीमें सुरक्षित बनाये हुए है। ऐतिहासिक और काव्यात्मक दोनों ही दृष्टियोंसे आज इस साहित्यका विशेष महत्व बढ़ गया है। परंतु जब तक इसका ठीकसे मूल्यांकन नहीं होता है तब तक मध्ययुगीन भारतीय साहित्यका यथार्थ चित्र अस्पष्ट ही रहेगा। आशा है, भविष्यकी स्पष्ट भावभरी उज्ज्वल रेखाओंमें इसका यथार्थ रूप शीघ्र ही प्रकाशित हो सकेगा। और तभी हिन्दी भाषा तथा साहित्यके उदय तथा विकासकी वास्तविक परम्पराका बोध हो सकेगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org